Name:- Sonikumari
Class:- B.A II year
Deptt:- Sanskrit

समास

नदीभिश्च

(1) प्रस्तुत सूत्र वरदराज विरचित लघुसिद्धान्त कौमुदी के समास प्रकरण के अव्ययीभाव समास का सूत्र है। मात्र नदीभिश्च कहने से सूत्र का अर्थ स्पष्ट नहीं होता अतः इसको स्पष्टीकरण के लिए 'प्राक्कडारात समास' तथा 'अव्ययीभावः' की अनुवृत्ति करते हैं, संख्या वंश्येन' से संख्या तथा तथा सह सुपा से सह की अनुवृत्ति होने पर सूत्र का अर्थ होगा — नदी वाचक शब्दों के साथ संख्या वाचक शब्दों का समास होता है और वह समास अव्ययीभाव संज्ञक होता है। यह समाहार अर्थ में ही होता है। उदा० — पञ्चगङ्गम, द्वियमुनम् ।

(2) ## अव्ययीभावे शरत्प्रभृतिभ्यः

यह विधिसूत्र है। सूत्र की अभिव्यक्ति के लिए राजाहः सखिभ्यष्टच' से टच् की अनुवृत्ति होती है। समासान्ताः का अधिकार प्राप्त है। अतः सूत्र का अर्थ है — अव्ययीभाव समास में शरद् आदि गण में पठित प्रातिपदिकों से समासान्त टच्' (अ) प्रत्यय होता है।

जैसे:- शरदः समीपम् (शरद के समीप) इस विग्रह में 'शरद्' शब्द से टच् करने पर 'उपशरदम्' रूप बनता है।
इसी प्रकार विपाशः अभिमुखम् (विपाश-व्यास नदी की ओर) इस विग्रह में प्रति विपाशम् रूप होता है।

रामायण का काव्य वैशिष्ट्य

Name:- Soni Kum
class:- B.A I year
Deptt:- Sanskrit

वार्

वाल्मीकि रामायण भारतीय संस्कृत साहित्य का आदर्श ग्रंथ है। इसी को आधार बनाकर विभिन्न ग्रन्थों का प्रणयन हुआ है। इसी को आधार बनाकर महाकाव्य के लक्षणों का निरूपण हुआ है। फलतः रामायण में महाकाव्य के सभी लक्षण विद्यमान है। वाल्मीकि की भाषा उदात्त भावों की अभिव्यक्ति का समर्थ माध्यम है। महर्षि ने अपने भावों की अभिव्यक्ति सरल एवं सरस शब्दों के द्वारा की है। समासहीन और छोटे-छोटे वाक्यों का प्रयोग किया गया है, जो पाठक के हृदय को सहज में ही अपनी ओर आकृष्ट कर लेते हैं। काव्य की आत्मा भावपक्ष होती है तथा शरीर कलापक्ष होता है। इन दोनों का सहज संबंध है। विद्वानों ने उनकी रचना शैली, विचारों की मनोहरता तथा रमणीय दृश्यों के चित्रण के कारण अलंकृत शैली के काव्यों में रामायण को सर्वोपरि स्थान दिया है। इस महाकाव्य में मानवोचित गुणों का तथा अन्तःप्रकृति का जैसा स्वाभाविक, सूक्ष्म एवं सुन्दर विश्लेषण हुआ है, वैसा ही बाह्य प्रकृति के दृश्यों का भी सजीव और यथार्थ चित्रण हुआ है। शाब्दी सुषमा की ओर महर्षि का ध्यान स्वतः आकृष्ट हुआ है, उन्होंने इसका प्रकटीकरण बड़ी सुन्दरता एवं भावुकता के साथ किया है ———

विनष्टशीतांबुतुषारपंको महाग्रहविनष्टपंकः।
प्रकाशलक्ष्म्याश्रयनिर्मलांको रराज चन्द्रो भगवान् शशांकः॥

रामायण में अलंकारों का प्रयोग बड़ी सुन्दरता के साथ किया गया है। उपमा, रूपक, श्लेष, अर्थान्तरन्यास आदि का सुन्दर प्रयोग व्यवस्त के रूप, गुण और स्वभाव का स्पष्टीकरण बड़ी रुचिरता के साथ है। वाल्मीकि ने अपने काव्य में उपमा का प्रयोग बड़े अद्भुत ढंग से किया है। जिसकी तुलना अन्यत्र नहीं मिलती। ~~वाल्मीकिय~~ वाल्मीकीय उपमा अपने औचित्य, सानुकूल्य तथा रसानुकूल्य से पाठक का ध्यान सहज में ही आकृष्ट कर लेती है। अशोकवाटिका में बैठी सीता के वर्णन में कवि महर्षि ने उपमाओं का सजीव चित्रण प्रस्तुत किया है। सीता की चोटी की उपमा नागिन के

साथ तथा सीता की उपमा पृथ्वी के साथ कितनी सजीव प्रतीत होती है —

नीलनागाभया वेण्या जघनं गतयैकया।
नीलया नीरदापाये वनराज्या महीमिव ॥

शोक के भार से न्यस्त सीता धूमजाल से संसक्त अग्नि की शिखा के समान है। कमलनयनी सीता कामदेव की पत्नी रति के समान सुन्दर थी, तथा पूर्णचन्द्रमा की प्रभा के समान समस्त जगत को इष्ट थी —

सीतां पद्मपलाशाक्षीं मन्मथस्य रतिं यथा।
इष्टां सर्वस्य जगतः पूर्णचन्द्रप्रभामिव ॥

संदिग्ध स्मृति, प्रतिहत आशा, विहत श्रद्धा, विघ्न बाधा से युक्त शोकमग्ना सीता की तुलना करने वाला कवि हमारे हृदय में दैन्य की भावना को सहज में भर देता है। सीता को देखकर हनुमान भी इसी प्रकार सशंकित हो जाते हैं जिस प्रकार अनभ्यास के कारण विद्या पद-पद भ्रमजन्य होती है —

तस्य संदिदिहे बुद्धिस्तथा सीतां निरीक्ष्य च।
आम्नायानामयोगेन विद्यां प्रशिथिलामिव ॥

अलंकार से हीन तथा स्नान, अनुलेपन आदि अङ्गसंस्कार से च्युत सीता को हनुमान जी बड़े कष्ट से पहचान पाते हैं —

दुःखेन बुबुधे सीतां हनुमाननलंकृताम्।
संस्कारेण यथा हीनां वाचमर्थान्तरं गताम् ॥

इसी प्रकार उत्प्रेक्षा का चित्रण भी बड़ा ही सजीव एवं चमत्कारपूर्ण है। लंका-दहन के पश्चात हनुमान जी जब अरिष्ट पर्वत पर चढ़ते हैं तब वाल्मीकि ने उत्प्रेक्षाओं का अद्भुत वर्णन किया है —

आरुरोह गिरिश्रेष्ठमरिष्टमरिमर्दनः।
तुङ्गपद्मकजुष्टाभिर्नीलाभिर्वनराजिभिः ॥